# कुमार कस्सप

बुद्ध के अग्रश्रावकों की शृंखला में वि.वि.वि से प्रकाशित यह पुस्तक पुराने साधकों को गंभीरतापूर्वक साधना करने के लिए प्रेरित करती है तथा नये साधकों को विपश्यना के अनुकरणीय एवं आदर्श साधकों के मार्ग पर चलने को प्रेरित करती है।

इस पुस्तक में बुद्ध के कुशल वक्ता भिक्षु श्रावकों में अग्र 'कुमार कस्सप' जीवनचरित वर्णित है।

स्थविर कुमार कस्सप का जन्म भिक्षुणी विहार में हुआ था और पालन-पोषण राजमहल में। वे एक भिक्षुणी के पुत्र थे। विवाह के थोड़े ही दिनों बाद कस्सप की मां प्रव्रजित हो गयी। वह अपने गर्भिणी भाव को नहीं जानती थी। बुद्ध ने परिषद के मध्य जाँच करा कर पाया कि उसका गर्भ गृहस्थ काल का है। भिक्षुणी एकदम परिशुद्ध है।

पूर्व जन्मों के कुशल कार्यों के फलस्वरूप आयुष्मान कस्सप को सात वर्ष की अवस्था में धर्म संवेग जागा और वे प्रव्रजित हो गये। एक ब्रह्म की सहायता से वे बारह वर्षों बाद अर्हत्व को प्राप्त हुए।

इनकी भाषण कला अद्भुत थी। अपनी भाषण कला से राजन्य पायासि की मिथ्या धारणा को समाप्त करने पर भगवान ने स्थविर कुमार कस्सप को वक्ताओं में अग्र स्थान पर प्रतिष्ठित किया।

साधकों तथा जो साधक नहीं भी हैं उन दोनों के लिए यह एक आदर्श पुस्तक है।